

## Important Question Class 7 Hindi Chapter 3 कठपुतली

1. कविता “कठपुतली” के रचयिता का नाम बतायें।

उत्तर: “भवानीप्रसाद मिश्र” इस कविता के रचयिता का नाम है।

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

1.आगे

2.इच्छा

उत्तर:

1.आगे – पीछे

2.इच्छा – अनिच्छा

3. निम्न शब्दों के शब्दार्थ लिखिए।

1. कठपुतली

2. छूए

उत्तर:

1.कठपुतली – धागे से हिलने-डुलने वाले खिलौने।

2.छूए – स्पर्श, संपर्क

4. निम्न शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

इच्छा , गुस्सा ।

उत्तर: इच्छा – मर्जी, इरादा ,मन ।

गुस्सा – क्रोध, नाराजगी ।

5. मुझे मेरे ..... छोड़ दो। पंक्ति को पूरा करो।

उत्तर: मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।

लघु उत्तरीय प्रश्न:- (2 अंक)

6. कविता में कठपुतली किस पर गुस्सा कर रही है?

**उत्तर:** कविता में कठपुतली धागे पर गुस्सा कर रही हैं। वह ऐसा इसलिए कर रही है क्योंकि उसे लगता है उसकी जीवन रुपी डोर धागे पर निर्भर हैं।

### 7. कठपुतली के मन में कैसी इच्छा जाग्रत हुई |

**उत्तर:** कठपुतली के मन में यह इच्छा जाग्रत हुई, कि वह धागों से आज़ादी प्राप्त कर के अपनी स्वयं की पहचान बनाएगी | कठपुतली के मन में आज़ादी से जीने की इच्छा जाग्रत हुई |

### 8. कठपुतली धागे से क्यों गुस्सा है?

**उत्तर:** कठपुतली धागे से इसलिए गुस्सा है, क्योंकि धागे ने उसको पकड़ रखा है। धागे की पकड़ की वजह से वह खुद को आजाद महसूस नहीं कर पा रही थी।

### 9. कठपुतली क्या चाहती है?

**उत्तर:** कठपुतली यह चाहती थी, कि वह अपने पैरों पर चले, बिना धागे का सहारा लिए | अर्थात् उस को धागे कि कभी जरूरत ना पड़े | बिना धागे के आज़ादी से आगे बढ़े |

### 10. कठपुतली धागे को क्या कहती है?

**उत्तर:** कठपुतली से कहती है, कि धागों तुम मेरे आगे – पीछे क्यों रहते हो। कठपुतली धागों से आज़ादी चाहती है | तुम मुझसे अलग हो जाओ ताकि मैं स्वयं को स्वतंत्र समाज सकू |

### लघु उत्तरीय प्रश्न:- (3 अंक)

#### 11. कठपुतली गुस्से से उबली,

बोली-ये धागे क्यों हैं, मेरे पीछे-आगे?

उपरोक्त पंक्तियों का आशय व्यक्त करो।

**उत्तर:** कवि कहते हैं, कि कठपुतली गुस्सा हो जाती है, क्योंकि वह एक धागे से बंधी है, और वह आजाद होने की इच्छा प्रकट करती है। वह बोलती है, कि क्यों ये धागे हमेशा मेरे साथ रहते हैं | मैं इनसे खुद को मुक्त क्यों नहीं कर सकती। मैं अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूँ।

#### 12. “इन्हें तोड़ दो;

मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।”

उपरोक्त पंक्तियों का आशय व्यक्त करो।

**उत्तर:** दुख से बाहर निकलने के लिए एक कठपुतली बगावत करती है, और कहती है कि इस धागे को तोड़ दो और मुझे अपने पैरों खड़ा होने दो से आशय यह है, कि मैं भी आजाद होना चाहती हूँ। स्वयं को आजाद करना चाहती है ताकि उसको धागे के सहारे की जरूरत ना पड़े | बंधन से मुक्त होना चाहती हूँ। वह धागे से अपनी पहचान नहीं अपितु स्वयं कि पहचान बनाना चाहती है।

13. पहली कठपुतली सोचने लगी,

ये कैसी इच्छा,

मेरे मन में जगी?

उपरोक्त पंक्तियों का आशय व्यक्त करो।

**उत्तर:** जब पहली कठपुतली आजाद होने के लिए बगावत करती है, तो उसके साथकी सभी कठपुतलियाँ भी हाँ में हाँ मिलाती हैं। आशय है कि जिस प्रकार मैं अपने आप को बंधन से मुक्त करना चाहती हूँ, उसी प्रकार बाकि सब कठपुतलियोंकी मुक्ति की भी जिम्मेदारी भी मैं लेकर सब को मुक्त कराना चाहती है। कठपुतली सोचती है, कि वह बाकि सब कठपुतलियों कि जिम्मेदारी उठा सकने में सक्षम है। ये सब सोच कर वह चिंतित है कि वो जो करने जा रही है वो कर पायेगी।

14. पहली कठपुतली में अच्छी बात क्या है?

**उत्तर:** पहली कठपुतली में अच्छी बात यह है, कि वह दूसरी कठपुतलियों को पसंद करती थी, और पहली कठपुतली स्वतंत्र होने की बात कर रही थी, और दूसरी कठपुतलियों के बंधन से मुक्त होना चाहती थी। वह केवल स्वयं के लिए नहीं अपितु अपनी सखियों के विषय सोचती है। अर्थात् वो अपने साथ साथ सब सखियों कि भी स्वतंत्रता चाहती है। ताकि सब आगे भी साथ ही रहे।

15. कठपुतली गुस्से से उबली

बोली, ये धागे क्यों हैं मेरे पीछे-आगे?

उपरोक्त पंक्तियों का आशय व्यक्त करो।

**उत्तर:** पंक्तियों में कवि "भवानीप्रसाद मिश्र" कहते हैं, कि कठपुतली गुस्सा है, और धागे से पूछती है, कि अरे! धागों मेरे आगे – पीछे क्यों ? पड़े हो। मुझे छोड़ दो, मैं भी आजाद होना चाहती हूँ। तुम मुझे स्वतंत्र नहीं करना चाहते और सदैव मेरे आगे पीछे आते रहते हैं। मैं तुमसे अलग होकर अपनी पहचान से जीना चाहती हूँ। ये सब कठपुतली धागे को गुस्से में बोलती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:- (5 अंक)

16. "सुनकर बोलीं और-और

कठपुतलियाँ

कि हां,"

उपरोक्त पंक्तियों का आशय व्यक्त करो।

**उत्तर:** दुख से बाहर निकलने के लिए जब एक कठपुतली बगावत कर देती है, तो उसकी बात सभी कठपुतलियों को अच्छी लगती है, और फिर सब कठपुतलियाँ उसके प्रतिध्वनि करती हैं और कहती है कि हमको भी मुक्त करो। हम सब अपने पैरों पर खड़ा होना चाहते हैं। आशय है, कि जब एक कठपुतली स्वतंत्र

होने बात करती है, तो सब कठपुलियों को उसकी बात ठीक लगती है, वो सब उसका समर्थन करती है, ताकि वो सब भी स्वतंत्र हो जाए और स्वयं अपने पैरो पर खड़ी हो सके। अर्थात् प्रत्येक जीव और वस्तु को आज़ादी से प्रेम होता है। कठपुतलिया स्वयं कि पहचान बनाना चाहती है, और आज़ादी से बिना धागे के जीवन का आनंद लेना चाहती है।

### 17. पहली कठपुतली ने दूसरी कठपुतलियों को कैसे प्रभावित किया?

**उत्तर:** पहली कठपुतली ने जब खुद को... आजाद करने की बात धागे से कहती है... , तो उसकी बात सुनकर दूसरी कठपुतलियों के मन में भी आजादी होने इच्छा जाग उठती है। इस तरह पहली कठपुतली दूसरों को प्रभावित करती है। कठपुतलियाँ ये सुनकर बहुत प्रभावित होती हैं। सब अपना समर्थन देती है। वो कहती है कि किसी एक ने तो आजाद होने की बात सोची तो क्यों ना हम सब भी उसको अपना समर्थन दे। तब ही हम सब स्वतंत्र हो पाएंगे। अर्थात् किसी भी कठिन कार्य को करने के लिए किसी ना किसी को तो पहल करनी पडती है, इसी प्रकार एक कठपुतली आगे बढ़ी तो बाकि सबने उसका समर्थन किया। ताकि सब अपनी पहचान बना कर जी सके।

### 18. कठपुतलियों अपने पैरों पर खड़ा क्यों नहीं हो सकती है?

**उत्तर:** कठपुतलियाँ अपने पैरो इसलिए नहीं खड़ी हो सकती थी, क्योंकि जैस की हम लोग जानते है, कि कठपुतलियाँ धागे से बंधी हुई होती है। इसलिए वह अपने पैरों पर खड़ा होने में असमर्थ है। धागे से आजाद होने के बाद ही वो अपने पैरो पर खड़ी हो सकती है। उन्हें इस बात का बहुत दुःख है कि वे कब धागों से मुक्त होकर स्वयं अपने पैरो पर खड़ी होंगी। अतः धागे से मुक्ति ही उन्हें पैरो पर खड़ा कर सकती है। जब तक धागा उनको सहारा देता रहेगा तब तक वो स्वयं नहीं चल सकती। और उनकी पहचान केवल धागे से होगी, धागे के अभाव में अधूरी होगी। इसलिए धागे से मिली पहचान से वो आज़ादी चाहती है। धागे से मुक्त होकर ही वो अपने पैरो पर खड़ी हो सकती है।

### 19. “बहुत दिन हुए”

हमें अपने मन के छंद छुए।“

**उपरोक्त पंक्तियों का आशय व्यक्त करो।**

**उत्तर:** यहाँ 'मन के छंद से भाव है, कि कठपुतली' मन की प्रसन्नता को दर्शाते हुए कहती है, कि लंबे समय से हमने अपनी मर्जी से अपनी खुशी के लिए कुछ भी नहीं किया है। इस कारणवश हमारे मन की इच्छाएं समाप्त हो गई हैं। और हमारे मन का दुःख दूर नहीं हुआ है। हम जो करते है वो धागे कि मर्जी से करते है। हमें जैसे चाहे वैसे हिलाता डूलाता है। हम विवश है, इस कारण मन की सब इच्छाएं समाप्त हो गयी है। हम मुक्त होकर ही प्रसन्न हो सकते है हमारी खुशी केवल स्वतंत्र होने में ही है। अर्थात् जब हम किसी के बंधन में होते है, तो हमारी कोई मर्जी या पहचान नहीं होती जिस से हमारे मन कि सभी इच्छाएं समाप्त हो जाती है। ऐसा लगता है जीवन का आधार ही नहीं है कुछ। जीवन तो किसी दुसरे के हाथ में है। इसलिए आज़ादी में ही जीवन है अन्यथा सब व्यर्थ है।

### 20. आजादी की बात कहने के पश्चात् पहली कठपुतली क्या सोचने लगी?

**उत्तर:** पहले कठपुतली ने अपनी इच्छा व्यक्त तो कर दी थी। लेकिन बाद में सोचने लगी, कि उसके पास स्वतंत्र होने की क्षमता है या नहीं। अकेले स्वतंत्र होना अलग बात है। और दूसरों को स्वतंत्र बनाना अलग बात है। उसे लगा कि उसकी आयु अभी इतनी नहीं है, कि वह सभी की जिम्मेदारी ले सके। इस प्रकार उसे लगा कि जो वो

कर रही है ,वो ठीक भी है ,या नहीं| वो सब कि जिम्मेदारी उठा पाएगी या नहीं | ये उसके लिए चिंता का विषय बनता जा रहा था|अतः वह सोच में पड गयी, कि जो वो करने जा रही वो उसको किस प्रकार कर पायेगी |सब सखियों के साथ आजाद होने कि खुशी भी थी| और साथ में ये दुःख भी था, कि हम सब आखिर आजाद हो भी पाएंगे |और यदि होंगे तो किस प्रकार इतनी आयु है, या नहीं |और सबसे बड़ी बात कि इतनी हिम्मत हम कर पयेंगे या नहीं |